Date: / / Page

लोक नृत्य

राजस्थान कला व संस्कृति की रंगस्थली है। राजस्थान के लोक नृत्य सरस, भावभिनेय एवं मनोहारी होने के कारण विश्व विख्यात है। यहाँ के लोक नृत्य सांस्कृतिक चेतना के वाहक है। ऋतु परिवर्तन हो या कोई त्योहार, पर्वोत्सव हो या फिर घर में कोई मांगलिक कार्य। यहाँ के नर-नारी खुशी में झूम उठते है। भक्तिरस में डूबे लोग भी तन्मय होकर नृत्य करने लगते है। इस प्रकार नृत्य राजस्थानी जनजीवन का प्रमुख अंग है। उच्चवर्ग के स्त्री-पुरुष, कुमारी बालिकाएँ एवं पेशेवर जातियों के लोग सभी नृत्य करते है। यहाँ के प्रमुख नृत्यों में- भँवई नृत्य, घूमर नृत्य, डांडिया नृत्य, तेरहताली नृत्य, कालबेलिया नृत्य, ढोल नृत्य, थाली नृत्य, गणगौर नृत्य आदि प्रमुख है। जिनमें स्थानीय रंग की छटा दिखाई देती है। भंवाई नृत्य, कालबेलियो का नृत्य व तेरहताली नृत्य ने तो विदेशों में भी धूम मचाई है।

1) गवरी नृत्य

लोक संस्कृति का प्रतीक गवरी नृत्य निराला ही है। यह भीलों का लोक नृत्य है। इस नृत्य का विषय मोहिनी स्वरूप भगवान विष्णु द्वारा भस्मासुर का अंत कर शिवजी को बचाने से संबंधित है। भस्मासुर को ताडंव नृत्य सिखाते हुए बड़ी चतुराई से भस्म का कड़ा उसी के हाथ से उसके सिर पर घुमा दिया तथा उस पापी का अंत कर दिया। तब भगवान शिव ने प्रसन्न होकर भीलों के साथ नृत्य किया। यह कथा गवरी के रूप से विख्यात है। गवरी नृत्य का आयोजन रक्षाबन्धन के दूसरे दिन से होता है जो लगभग डेढ माह तक चलता है। भोपा खेड़ा देवी से आज्ञा लेता है फिर पात्र मंदिर में धोग देकर देवी-देवताओं व भैरू का स्मरण करते है। इस आयोजन के दौरान इसके पात्र व्रत व संयम रखते है। इस अवधि में शराब, मांस, हरी सब्जी का सेवन

नहीं करते है। रातभर देवी की आराधना करते है। इस नृत्य की वेशभूषा बहुत ही आकर्षक होता है। इसके पात्र धरती पर गोलाकर घूमते हुए नृत्य एवं अभिनय करते है।

2) गैर नृत्य → राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों में होली के अवसर पर पूरे माह में गैर नृत्य चलता रहता है। इस नृत्य में ढोल, थाली के माध्यम से पुरुष लकड़ियों के डंके के साथ नाचते है। ताल के साथ थिरकते हुए अंग-प्रत्यंग होली की मादकता एवं उल्लास का अहसास कराते है। कभी-2 एक ओर स्त्रियों का दल तथा उसके सामने दूसरी ओर पुरुषों का दल नृत्य करते हुए पास आते है और फिर पीछे हटते है। इस तरह नृत्य चलता रहता है। अब तो यह नृत्य विभिन्न जाति के लोग भी करते है। जोधपुर, कड़ाना, बाड़मेर आदि के गैर नृत्य प्रसिद्ध है।

3) भंवाई नृत्य ⇒ भंवाई नृत्य भी राजस्थान का लोक प्रसिद्ध नृत्य है। इस नृत्य में उच्च स्तर की भाव-भंगिमा तथा पद-संचालन की वक्र-चाल देखते ही बनती है। भंवाई नर्तक अपने सिर पर अनेक मटके रखकर नृत्य करता है। नर्तक शरीर का ऐसा संतुलन रखता है कि एक भी मटका नृत्य करते समय हिलता तक नहीं है। भंवाई नृत्य करने वाले ऐसे-2 करतब दिखाते है कि दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाते है। जैसे सिर पर मटके रखकर जमीन पर पड़ी थाली पर खड़े होकर ताल के साथ पैरों से थाली सरकाते हुए, ~~\\\\\\~~, कांच की गिलास पर खड़े होकर गिलास सरकाते हुए, भाले को ऊपर फेंककर नृत्यक्षेत्र का चक्कर लगाते हुए पुनः समय पर आकर गिरने से पहले

Date: / /

भाले को पकड़ना, तलवार की धार पर नृत्य करना आदि रोमांचक करतब देखने योग्य होते हैं।

(4) डांडिया नृत्य — राजस्थान में विशेष रूप से मारवाड़ में नवरात्रि के दिनों में स्थान-2 पर डांडिया नृत्य होता है। यह प्रायः रात्रि में होता है। खुले मैदान में गोलाकार आकृति में स्त्री व पुरुष खड़े हो जाते हैं। दोनों हाथों में डांडिया ले लेते हैं फिर ताल के साथ आपस में डांडिया टकराते हैं। अपने आजू-बाजू खड़े व्यक्तियों से डांडिया टकराते हुए गोलाकार घूमते जाते हैं। डांडिया नृत्य करने वाले स्वांग भी धारण करते हैं। जैसे- सेठ-सेठानी, राजा-रानी, बादशाह - बेगम, राधा-कृष्ण आदि।

(5) गरबा नृत्य ⇒ गरबा गुजरात का प्रसिद्ध भक्तिपूर्ण नृत्य है जिसे नवरात्रि में दुर्गा की आराधना में तन्मय होकर नृत्य करती हैं। गुजरात से जुड़े हुए होने के कारण राजस्थान में भी इसका प्रचलन है। डूंगरपुर, आबू, पाली व बांसवाड़ा में तो यह नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। गरबा तीन रूपों में किया जाता है। प्रथम रूप तो वह है जिसमें शक्ति की आराधना में स्त्रियाँ मिट्टी के घड़े में छेद करके उसमें दीपक जलाकर फिर उसे सिर पर रखकर बे धीरे-2 गोलाकार घूमती हुई नृत्य करती हैं। यह नृत्य ताली व चुटकी से किया जाता है। गरबा का दूसरा रूप रास नृत्य है जिसमें राधा-कृष्ण, गोप-गोपियों के प्रणय चित्रण का प्रस्तुतिकरण होता है। तीसरे रूप में लोक जीवन का सौन्दर्य प्रकट होता है। इसे पणिहारी, नववधू की भावुकता, गृहकार्य में लीन स्त्रियों का चित्रण होता है। गरबा करते समय दुर्गा की भक्ति से संबंधित गीत गाए जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(4)

6) घूमर नृत्य ⇒ राजस्थान का एक लोकप्रिय नृत्य घूमर है। जिसे स्त्रियाँ होली के पश्चात गणगौर के दिनों में करती हैं। घूमर नृत्य भी गोलाकार घूमते हुए किया जाता है। इस नृत्य में स्त्रियों की भाव-भंगिमा के साथ-2 लहराते हुए घेर-घूमेर लहंगे की छटा देखते ही बनती है। संगीत की तीव्रता से तेज गति से गोल-2 घूमने पर फूला हुआ लहंगा बहुत ही आकर्षक लगता है। घूमर नृत्य करते समय घूमर लोकगीत गाया जाता है। घूमर नृत्य विवाह के समय घर की औरतों द्वारा किया जाता है।

7) विविध नृत्य ⇒ राजस्थान में पेशेवर जातियों द्वारा अनेक ऐसे लोक नृत्य किए जाते हैं जिन्हें देखकर लोग दांतों तले अंगुली दबाते हैं। शारीरिक कलाबाजियों की दृष्टि से नट-नटिव नटी का नृत्य अपनी विशेष पहचान रखता है। नटनी का मोर नृत्य बहुत ही मनमोहक होता है। मोर-सी चाल, गर्दन की लचक, हाथों की कलाबाजी से मोर पंखों का कंपन नृत्य में मोर को जीवंत बना देता है। नटनी दो बाँसों के छोरों पर बाँधे हुए रस्से पर भी नृत्य करती है।

कालबेलियाँ जाति की नारियाँ सँपेरा नृत्य के लिए प्रसिद्ध हैं। पुरुष पुंगी बजाता है तथा स्त्रियाँ काले गोटे लगे हुए कपड़े पहनकर बड़ा घूंघट निकालकर नृत्य करती हैं। इनकी वेशभूषा भी बड़ी आकर्षक होती है। भुजाओं पर बँधी लंबी डोरियाँ नृत्य के समय लहराती हैं। काले लिबास में नागिन की तरह बलखाती, लहराती इनकी देह की लचक लोगों के सामने नागिन का दृश्य प्रस्तुत करती है। यह तीव्र गति से शरीर को जैसा चाहे मोड़ लेती है। नृत्य करते हुए अपने शरीर को इतना पीछे झुका लेती है कि जमीन पर पड़े रुमाल

Date: / /

को दाँतों से उठा लेती है। इनके नृत्य देश में ही नहीं विदेशों में भी बड़े चाव से देखे जाते हैं।

राजस्थान के लोकनृत्य में कच्छीघोड़ी, जालोर का दोलआलर नृत्य, डीडवाने का तेरहताली नृत्य, चित्तौड़ का तुरीकलंगी नृत्य आदि प्रसिद्ध है। कच्छी घोड़ी नृत्य के अंतर्गत ढोल-थाली बजती है। नर्तक वीरोचित वेशभूषा धारण करके तलवार हाथमेंधारण करके लकड़ी या कपड़े से बनी सुंदर घोड़ी पर सवार होता है। इस घोड़ी की पीठ भीतर से खोखली होती है। नर्तक पैरों में घुँघरू बाँधकर घोड़ी की पीठ के भीतर इस तरह खड़ा हो जाता है कि उसके शरीर का ऊपरी भाग ही बाहर दिखायी देती है बाकी भाग घोड़े के भीतर ढका रहता है। पैर जमीन पर टिके होने से नर्तक ढोल-थाली की आवाज के साथ इस तरह नृत्य करता हुआ घूमता है मानो घोड़ी ठुमक-ठुमक कर नृत्य करते हुए घूम रही हो और घोड़ी पर सवार वीर तलवार चला रहा हो।

राजस्थान में तेरहताली नृत्य भी बहुत प्रसिद्ध है। राजस्थानी वेशभूषा में सजी नारी अपने दाहिने पैर पर धातु की एक प्लेटनुमा 8 मंजीरे क्रम से बाँधती है। वह एक-एक मंजीरे दोनों बाजू पर बाँधती है तथा एक-एक दोनों हाथों में पकड़े रहती है। फिर बड़ी कुशलता से हाथों के मंजीरों को पैर के मंजीरों से टकराती हुई ध्वनि उत्पन्न करती है, जो बड़ी कर्णप्रिय होती है। इसी तरह बाजू पर बँधे मंजीरों से भी हाथ के मंजीरों को टकराती है।

राजस्थान के लोकनृत्यों में राजस्थानी संस्कृति झलकती है। इस कला को जीवित रखने के लिए राजस्थान की अनेक संस्थाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कलाकेन्द्र अकादमी तथा सांस्कृतिक संस्थाएँ नृत्यों के प्रदर्शन की व्यवस्था कर लोक कलाकारों को प्रोत्साहन देती है। राजस्थानी लोक नृत्यों में कत्थक तथा भरत-

Scanned with CamScanner

(6)

Date: / / Page

नाट्यम् का व्याकरणिक लय और ताल का भले ही विन्यास न हो लेकिन उसमें एक विचित्र आकर्षण होता है।

Scanned with CamScanner